

अशांत वि. (तत्.) 1. जो शांत न हो 2. अस्थिर, चंचल।

अशांति स्त्री. (तत्.) 1. चंचलता, अस्थिरता 2. खलबली 3. असंतोष 4. क्षोभ।

अशाम्य वि. (तत्.) जिसका शमन असंभव हो, जिसे शांत न किया जा सके।

अशालीन वि. (तत्.) 1. शालीनता रहित, अशिष्ट 2. धृष्ट, ढीठ।

अशासकीय पुं. (तत्.) गैर-सरकारी, जो शासन या सरकार की ओर से न हो।

अशासकीय पत्र पुं. (तत्.) सरकारी पत्राचार का एक भेद जिसकी रूपरचना 'पत्र' की तरह पूर्णतः औपचारिक नहीं होती। un-official letter

अशासकीय विधेयक पुं. (तत्.) संसद या विधानमंडल के ऐसे सदस्य द्वारा प्रस्तुत विधेयक जो मंत्री पद पर न हो।

अशासन पुं. (तत्.) 1. शासन का अभाव 2. अराजकता, अव्यवस्थित शासन।

अशास्त्रीय वि. (तत्.) 1. जो शास्त्रानुसार न हो 2. जो श्रेण्य (क्लासिकल) न हो बिलो. शास्त्रीय।

अशिक्षा स्त्री. (तत्.) 1. शिक्षा का अभाव 2. ज्ञानाभाव 3. कुशिक्षा।

अशिक्षित वि. (तत्.) 1. जो शिक्षित न हो 2. अनपढ़, गँवार।

अशित वि. (तत्.) 1. खाया हुआ 2. बिना नोक अर्थात् बिना तीक्ष्णत्व वाला, बिना धार का, बिना नोक का, भोंथरा जैसे- लाठी एक अशित शस्त्र है।

अशिरस्क वि. (तत्.) बिना सिर का (धड़), केतु, कबंध।

अशिव पुं. (तत्.) अमंगल, अशुभ, अकल्याण वि. 1. अशुभ 2. दुष्ट 3. भाग्यहीन 4. अमित्र।

अशिष्ट वि. (तत्.) जो शिष्ट न हो, अशालीन, बेहूदा, उद्दंड।

अशिष्ट भाषा स्त्री. (तत्.) शिष्टजनों की भाषा से भिन्न भाषा जो प्रायः असंस्कृत, ग्राम्य, अव्याकरणिक या चलताऊ किस्म की होती है, ग्राम्य भाषा, उपभाषा, अवभाषा।

अशीत वि. (तत्.) जो ठंडा न हो, गरम, उष्ण।

अशीति स्त्री. (तत्.) अस्सी।

अशीतिक वि. (तत्.) अस्सी साल वाला, अस्सी का मापक या मात्रक।

अशीर्षक वि. (तत्.) दे. अशिरस्क 2. शीर्षक-रहित।

अशीर्षी वि. (तत्.) बिना सिर वाला, कबंध। प्राणि. सिर या उस जैसी संरचना से विहीन।

अशील वि. (तत्.) शीलरहित, अभद्र, अशिष्ट पुं. उद्दंडता।

अशुचि वि. (तत्.) 1. अपवित्र 2. मैला, गंदा 3. काला स्त्री. (तत्.) 1. अपवित्रता, मलिनता, अशौच 2. काला रंग।

अशुद्ध वि. (तत्.) 1. जो सही, साफ या मिलावट-रहित या पवित्र न हो, अपवित्र, गलत 2. असंस्कृत।

अशुद्धता स्त्री. (तत्.) 1. अपवित्रता, गंदगी 2. गलती, त्रुटि।

अशुद्धि स्त्री. (तत्.) 1. शुद्धता का अभाव, गंदगी 2. गलती।

अशुभ पुं. (तत्.) अमंगल, अकल्याण वि. (तत्.) जो शुभ न हो, अमंगलकारी।

अशुश्रूषा स्त्री. (तत्.) 1. अनसुनी करना 2. जिसकी सेवा में रहना चाहिए, उसकी आज्ञा में न रहना 3. सेवाटहल न करने की स्थिति 4. असम्मान।

अशुष्क वि. (तत्.) जो सूखा न हो, गीला, सरस।

अशुष्की तेल पुं. (तत्.) तेल जिसे हवा में खुला रखने पर भी न सूखने के कारण उसका गाढ़ापन नहीं बढ़ता।